Volume 2; Issue 1

January to March 2025

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika

संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refereed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका

E-ISSN: 3048-6742

https://sanskritisamvahika.in

Volume 2; Issue 1; January to March 2025; Page No. 1-7

Peer Review, Indexed and Refereed Journal

नदीतमा और गर्भगृह (मंदिर): राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक–धार्मिक एकता के प्रतीक के रूप में कुम्भ का महत्व

डॉ0 हर्षमणि सिंह

सहायक आचार्य

अर्थशास्त्र विभाग

आईएसडीसी

इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांशः *भारतीय उपमहाद्वीप की विशेषता है वह तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है, समुद्र के किनारे की बसावट और उनके जीवन निर्वाह के तौर तरीकों पर गौर कीजिए, समुद्री मार्गों से आने वाले बाहरी लोगों का संपर्क सबसे पहले, तटीय राज्यों में रह रहे लोगों से हुआ, यही कारण है यहाँ उद्योग धन्धों की विविधता से लेकर खान–पान और संस्कृति में अधिक विविधता है, यह दिलचस्प है कि किस तरह विविधता में एकता के प्रतीक ये समुद्री किनारे की बसावट हमारी संस्कृति की राजदूत है। लेकिन उपमहाद्वीप में आंतरिक हिस्से में नदियाँ जीवन दायिनी हैं, इन्हें मातृशक्ति तक का दर्जा प्राप्त है। गंगा उत्तर भारत की जीवन रेखा है, गंगा के स्पर्श मात्र से पाप धुल जाते हैं। हजारों साल से लोग इसकी धारा में स्नान करते आ रहे हैं, इसके जल को 'अमृत' और इसकी धारा को सुरसरि कहते हैं।*

मुख्य शब्दः ***नदीतमा, गर्भगृह (मंदिर), राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक, धार्मिक एकता, कुम्भ***

भारतीय उपमहाद्वीप नदी प्रधान अर्थव्यवस्था है, नदी तट पर स्थिर मंदिरों के गर्भगृह संस्कृति के ऐसे युग्म हैं जो इस महाद्वीप के लोक व्यवहार में परिलक्षित हैं। सात हजार सात सौ साल से भारत में नदियों के किनारे मंदिरों का उल्लेख मिलता

है, जब भगवान श्रीराम सीता जी से विवाह के मांगलिक कार्य के बाद भगवान श्री शिवशंकर के मंदिर में आशीर्वाद के लिए गए। तब से लेकर आज तक मंदिरो में भारतीय संस्कृति, सुरक्षित, संरक्षित, जीवित और जीवंत रही और फलीभूत हुई। मंदिर असीमित ऊर्जा के स्रोत हैं। यह संरचना ऊर्जा के रूप में इस देश के भू–भाग के जीवन–यापन को निर्धारित और निर्देशित करती है। मंदिर वास्तव में इस देश की अर्थव्यवस्था के हॉटस्पॉट हैं। व्यापार, व्यापार प्रोत्साहन परिवार की सुरक्षा के केन्द्र के रूप में स्थापित भारत के करोड़ों मंदिर एक शुभंकर हैं और नदियों का थाला एक लोक संस्कृति का पालना जो हमारी थाती है।

भारतीय उपमहाद्वीप की विशेषता है वह तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है, समुद्र के किनारे की बसावट और उनके जीवन निर्वाह के तौर तरीकों पर गौर कीजिए, समुद्री मार्गों से आने वाले बाहरी लोगों का संपर्क सबसे पहले, तटीय राज्यों में रह रहे लोगों से हुआ, यही कारण है यहाँ उद्योग धन्धों की विविधता से लेकर खान–पान और संस्कृति में अधिक विविधता है, यह दिलचस्प है कि किस तरह विविधता में एकता के प्रतीक ये समुद्री किनारे की बसावट हमारी सस्ं कृति की राजदूत है।

लेकिन उपमहाद्वीप में आंतरिक हिस्से में नदियाँ जीवन दायिनी हैं, इन्हें मातृशक्ति तक का दर्जा प्राप्त है। गंगा उत्तर भारत की जीवन रेखा है, गंगा के स्पर्श मात्र से पाप धुल जाते हैं। हजारों साल से लोग इसकी धारा में स्नान करते आ रहे हैं, इसके जल को 'अमृतप और इसकी धारा को सुरसरि कहते हैं।

प्रयाग में इसकी उपस्थिति इसकी एक अलग ही रचना संसार कहती है, 19वीं सदी से ही कुम्भ इसके थाले की विरासत है। श्रीराम ने इसी के तट पर भारद्वाज ऋषि के उपदेश सुने, राजा हर्षवर्धन हर पाँचवे साल अपनी सारी सम्पत्ति गरीबों में दान कर गंगा स्नान करता। इसी के पावन तट पर एक दिन गांधी जी की भस्मीभूत अस्थियाँ भी जल में निमग्न हुईं। प्रयाग निश्चय ही तीर्थराज है, और इसके तट पर लगने वाला कुम्भ मेला धार्मिक व आध्यात्मिक एकता का प्रतीक जिससे जुड़ी है लोक व्यवहार की अनेक गतिविधियाँ जो गंगा नदी के पास स्थिर जमावड़ा के जीवन निर्वाह का अभिन्न अंग है।

जब हम आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की बात कहना प्रारम्भ करते हैं, तो हमें भारत की अर्थव्यवस्था में विकसित और भारत के लिए आय के चक्रीय प्रवाह को समझना होगा। इस आय के चक्रीय प्रवाह में जनसंख्या को किस प्रकार वितरित किया जाय। इसके लिए बाजार के आकार को ध्यान में रखते हुये श्रम के विभाजन को

ध्यान में रखना होगा। इसका आशय यह कतई नहीं है कि यह बंद अर्थव्यवस्था पर लागू होगा। हम खुली अर्थव्यवस्था में आय के प्रवाह को बंद अर्थव्यवस्था के आय प्रवाह के समानांतर विकसित कर उसे पूरक अर्थव्यवस्था के रूप में विकसित करें। प्रतिस्पर्धी आय प्रवाह इसका समाधान नहीं है। इस संदर्भ में एक केस अध्ययन 'स्ट्रीट वेंडर पर भारतीय शहर के परिप्रेक्ष्य में किया गया' और इस क्षेत्र में लगे कामगारों की चुनौतियों का उल्लेख किया गया। इसे हम भारतीय अर्थव्यवस्था के आय के चक्रीय प्रवाह में किस तरह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र की संज्ञा देते हुए विकसित कर सकते हैं।

भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के एकाकार का प्रतीक प्रयागराज का कुंभ मेला दुनिया भर में विख्यात है। जो नदीतमा गंगा और जमुना के पावन तट का आंगन है। व्यक्ति में समर्पण की भावना का विकास उसे भक्ति की ओर उन्मुक्त करता है। यह भक्ति भावना उसे, कालिन्दी के तट से मिलती है, भक्ति के साथ ही चाहिए ज्ञान प्राप्ति जो इस संसार में व्यक्ति को अपने कर्तव्य पथ की ओर ले जाय जो माँ सरस्वती का वरदान है और अंत में भारतीय सनातनी परम्परा का आदर्श मोक्ष या वैराग्य संसार में रहकर भी संसार से विरक्ति गंगा की गोद में ही संभव है, इसीलिए साधु, सन्यासी गंगा नदी के किनारे ही अपना जीवन निर्वाह कर मुक्ति का मार्ग प्राप्त करते हैं और वैराग्य बनाए रखते हैं।

कुंभ मेला भारतीय सनातनी परम्परा का एक आदर्श है। अपनी धार्मिक, आध्यात्मिक, लौकिक कलेवर को समेटे अमौसा का मेला हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। इसकी जीवित मिसाल बना कुंभ मेला–2019 जिसने अपनी उपस्थिति विश्व पटल पर दर्ज की है। अगर सरकार की प्राथमिकता देखें तो 4600 करोड़ स्वीकृत बजट से तैयार, आधारभूत सुविधाओं से सुसज्जित, गंगा और यमुना नदी व गुप्त सरस्वती नदी के संगम पर इस महामेला ने अपनी आर्थिक व आध्यात्मिक चमक संपूर्ण विश्व में बिखेर दी। बात अगर कारोबार की करें तो तकरीबन 10 अरब का कारोबार मेले के दौरान हुआ यह प्रतिदिन के हिसाब से 10 से 15 करोड़ रुपये की आमदनी का जरिया बना लगभग 10 लाख कल्पवासी प्रतिदिन रेत की बालू पर बने टेन्टों में अपने आस्था व विश्वास का प्रतीक बने रहें और इस महान परम्परा में विदेशों से आये तमाम सैलानियों ने इस सनातनीय परम्परा को आत्मसात किया। पाप व पुण्य के अलावा पण्य का लेन–देन भी इस सगं म की लोक परम्परा है।

भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के कुशल संयोजन के परिणाम स्वरूप परम्परा और आधुनिकता के बेजोड़

संगम, बदलते भारत के तस्वीर को समूचे विश्व के समक्ष अगले पायदान के रूप में प्रस्तुतीकरण और स्वच्छता ही सर्वोपरि के मंतव्य को कुंभ मेला में प्रतिष्ठापित देखने को मिला। इस आयोजन में आधुनिक सूचना तकनीकि का अधिकतम प्रयोग देखने को मिला, मेले से जुड़ी छोटी व बड़ी जानकारियों को सैलानियों तक पहुँचाने के लिए कई तकनीकों का इण्टरनेट, वाईफाई मेले से जुड़े एप्प जो मेले में ठहरने, आने व जाने के लोगों के बारे में की जानकारियाँ पलक छपकते ही कुम्भ से जुड़ी वेबसाइटों पर उपलब्ध थी, कुम्भ आयोजन अपने भूले भटके शिविर के लिए हमेशा चर्चा का विषय रहता है। इस बार खोने वाले व्यक्तियों की सूचना एप्प के माध्यम से बड़ी–बड़ी एलईडी स्क्रीनों पर उपलब्ध थी, यहाँ तक कि खोने वाले व्यक्तियों के लिए रेडियो फ्यूकेंशी आइडेंटीफिकेशन का प्रयोग किया गया।

एक ऐसा पर्व जहाँ कोई आमंत्रण अपेक्षित नहीं, करोडो तीर्थयात्री इस पवित्र पर्व को मनाने के लिए मानों आतुर हैं, इसका प्रमाण है कि 2019 में लगभग 23 करोड़ लोगों ने माँ गंगा की गोद में सानिध्य प्राप्त किया। मानव मात्र का कल्याण संपूर्ण विश्व में सभी मानव

प्रजाति के मध्य वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में अच्छा सम्बन्ध बनाये रखने के साथ आदर्श विचारों एवं गूढ़ ज्ञान का आदान–प्रदान कुंभ का मूल तत्व और संदेश है।

अपने सामाजिक महत्व को समेटे कुंभ मेला अपने सनातनी परम्परा के वाहकों की दिनचर्या व जीविका को भी प्रभावित करता है, सरकारें अपनी योजनाओं के प्रचार–प्रसार के लिए भी इन आयोजनों से जुड़ती है। कुंभ मेला–2019 के सफल व कुशल आयोजन में सरकार ने स्वच्छता की बहे तरीन मिसाल पेश की 122000 से अधिक शौचालय, 20000 से अधिक डस्टबिन आंतरिक बैग के साथ, 1000 से अधिक सफाईकर्मी स्वच्छता की सबसे बड़ी प्रयोगशाला के रूप में करोड़ो लोगों के समक्ष उपस्थित रहे। जिन्हें सम्मानित करने के लिए भारत के प्रधानमंत्री स्वयं उपस्थित हुये।

सीआईआई की रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2013 में 1300 करोड़ के बजट की तुलना में 2019 में 4600 करोड़ के बजट से मेला सजाया गया, जिसमें मेले का क्षेत्रफल दुगना किया गया। करीब 1.4 लाख रोजगार के अवसर सृजित और सरकार को 1200 अरब रुपये राजस्व का अनुमान लगाया गया।

कुम्भ मेले का प्रतीक चिह्न पक्की मिट्टी से बना घड़ा है, जिसका आशय है कि जब कोई घट जल में प्रविष्ट होता है तो जब तक उसमें जल भरता रहता है, उसमें से ध्वनि निकलती रहती है, किंतु जैसे ही

वह पूर्णतरू भर जाता है शान्त हो जाता है। यही परम सत्य है। यही जीवन सार है और जब तक सृष्टि है, कुंभ मेला अपने इसी सार को अनवरत जारी रखे।

कल्पवास का लोक व्यवहार : संयम और अनुष्ठान

'कल्पवास' माघ मास में आयोजित होने वाले कुम्भ पर्व का एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान एवं रिवाज है। कल्पवासी पौष पूर्णिमा के पूर्व संगम क्षेत्र में पहुँचकर टेंट नुमा अस्थायी रहने की व्यवस्था कर ठीक पौष माह की पूर्णिता से उनका यम, नियम, प्रारम्भ हो जाता है जो माघ मास की पूर्णिता पर समाप्त होता है। ये कल्पवासी अपने इस माह भर के प्रवास के प्रथम दिन की शुरुआत 'खिचड़ी' खाकर एक गृहस्थ के स्थान पर सन्यासी की भांति सीमित एवं हलके आहार के लिए स्वयं को तैयार करते हैं और जब माघ मास की पूर्णिता को 'कल्पवास' समाप्त करते हैं, तब सांसारिकों अथवा गृहस्थों का भोजन अर्थात् जिह्वा को उस स्वाद एवं क्षुधा के

लिए तैयार करते हुए बेसन के कढ़ी–पकोड़े के गरिष्ठ भोजन के पश्चात् जौ तथा तुलसी को गंगा जी में प्रवाहित करके पुनरू पुण्य लाभ की कामना के साथ ही प्रस्थान करते हैं। 'कल्पवास' की अवधि में प्रत्येक 'कल्पवासी' की दिन में 03 बार गंगा स्नान करना होता है। इसमें मध्याह्न वाला स्नान, संगम में ही निर्धारित है। सम्भवतरू त्रिकाल सन्ध्या से यह शारीरिक शुचित सम्बद्ध है। इसी प्रकार 'कल्पवासियों' से यह अपेक्षा रहती है कि वे बस दिन भर में एक बार ही अन्न ग्रहण करेंगे वह भी सूर्यास्त के पूर्व। यह रिवाज गंगा नदी के तट पर जीवंत किया गया, वस्तु, विचार, ऊर्जा के लेन–देन का ऐसा प्रवाह है, जिसकी कल्पना एक ऐसी सामाजिक और आर्थिक प्रणाली का विकास है जिसकी बुनियाद 'भरोसे' और 'आस्था' पर आधारित है। कल्पवासी स्वयं भोजन पकाते हैं, इस दौरान अपने आगमन तथा अपने शिविर की स्थापना के उपरान्त सर्वप्रथम अपने प्रवास स्थान पर 'तुलसी' और 'जौ' बौने का कार्य करते हैं। तत्पश्चात् वे इस पूरे मास तक इस स्थान को न छोड़ने एवं अनुष्ठानों का कठोरता से अनुपालन का व्रत या सकं ल्प लेते हैं। यह संकल्प एक तपस्या है। ये रिवाज हमारे पुरखों की थाती है जो गंगा और जमुना की रेत पर पल्लवित हुई, हमें इन रिवाजों को बचाये रखना होगा क्योंकि ये आने वाली पीढ़ी की हमारे पास धरोहर है। इन्हीं सबके बीच गंगा के किनारे 13 जनवरी 2025 से कुंभ मेले का आयोजन होना है। पहले से अधिक बजट और अधिक पर्यटन के बीच हमें गंगा और उसके पारिस्थितिक तंत्र जैविक और अजैविक के सतं ुलन को बनाये रखने की चुनौती होगी।

संदर्भ सूची

1. हर्ष मणि सिंह : त्रिवेणी की उत्सवी त्रासदी, डाउन टू अर्थ (सितम्बर : 2024)
2. भगवतशरण उपाध्याय, 'भारत की संस्कृति की कहानीश, राजपाल एण्ड सन्स (2022)
3. हर्षमणि सिंह, स्वराज के पचहत्तर वर्ष और भारतीय कृषि, द जर्नल ऑफ इण्डियन थॉट एण्ड पॉलिसी रिसर्च, नवम्बर (2022)
4. गौतम चिकरमानी, रिफार्म नेशन प्रह्राम द कन्सट्रेंटस ऑफ पी.वी. नरसिम्हा राव टू द कन्वीक्शन ऑफ नरेन्द्र मोदी, हार्पर कालिंस पब्लिशर्स (2022)
5. मुरली मनोहर जोशी, धर्म रू समग्र विकास का सनातन मार्ग, द जर्नल ऑफ इण्डियन थॉट एण्ड पॉलिसी रिसर्च, अक्टूबर (2021)
6. हेरम्ब चतुर्वेदी, जहाँआरा, एक ख्वाब, एक हक़ीकत, वाणी प्रकाशन (2022)
7. हेरम्ब चतुर्वेदी, कुम्भ ऐतिहासिक वाङ्मय, वाणी प्रकाशन (2019)
8. अली सरदार ज़ाफरी, लखनऊ की पाँच रातें, राजकमल पेपर बैक्स (सातवाँ संस्करण,

   2022)
9. दया प्रकाश सिन्हा; लोकरंग, उत्तर प्रदेश, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान (1990)
10. 'मिज़ाज', हर्ष मणि सिंह रू रात के जूड़े में पलाश के फूल, आर्थर प्रेस (2022)
11. आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2002–2003; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2003–2004; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2004–2005; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2005–2006; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2006–2007; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2007–2008; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2008–2009; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2009–2010; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2010–2011; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2011–2012; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2012–2013; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2013–2014; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2014–2015; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2015–2016; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2016–2017; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2017–2018; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2018–2019; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2019–2020; आर्थिक

समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2020–2021; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2021–2022; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2022–2023; आर्थिक समीक्षा, वित्त मंत्रालय, वर्ष 2023–2024

12. भारत : विभिन्न संस्करण, सूचना एवं प्रसारण विभाग, भारत सरकार

13. उत्तर प्रदेश : विभिन्न संस्करण, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार

14. lokpahal.org